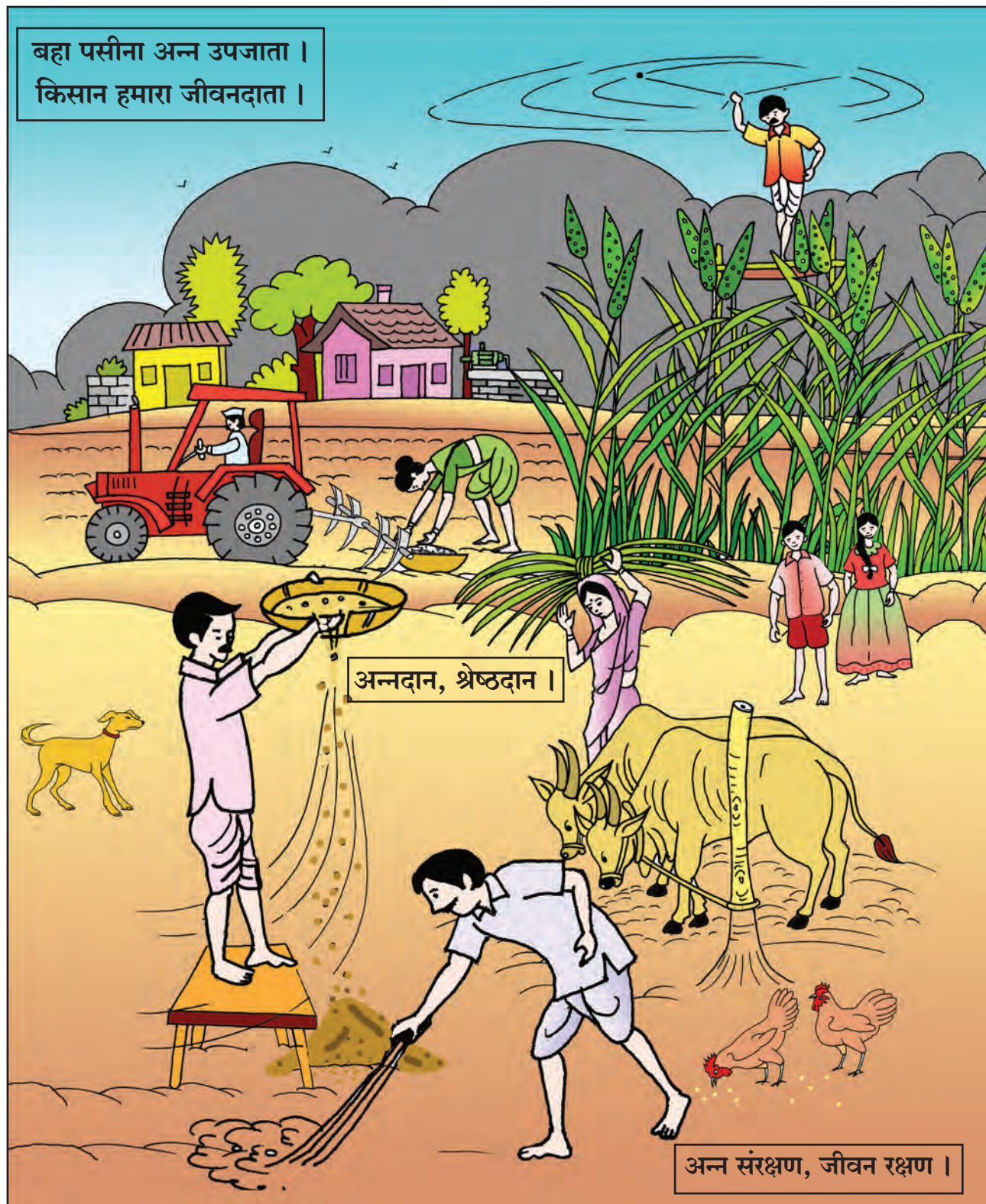


● पूर्वानुभव – पहचानो और बताओ :

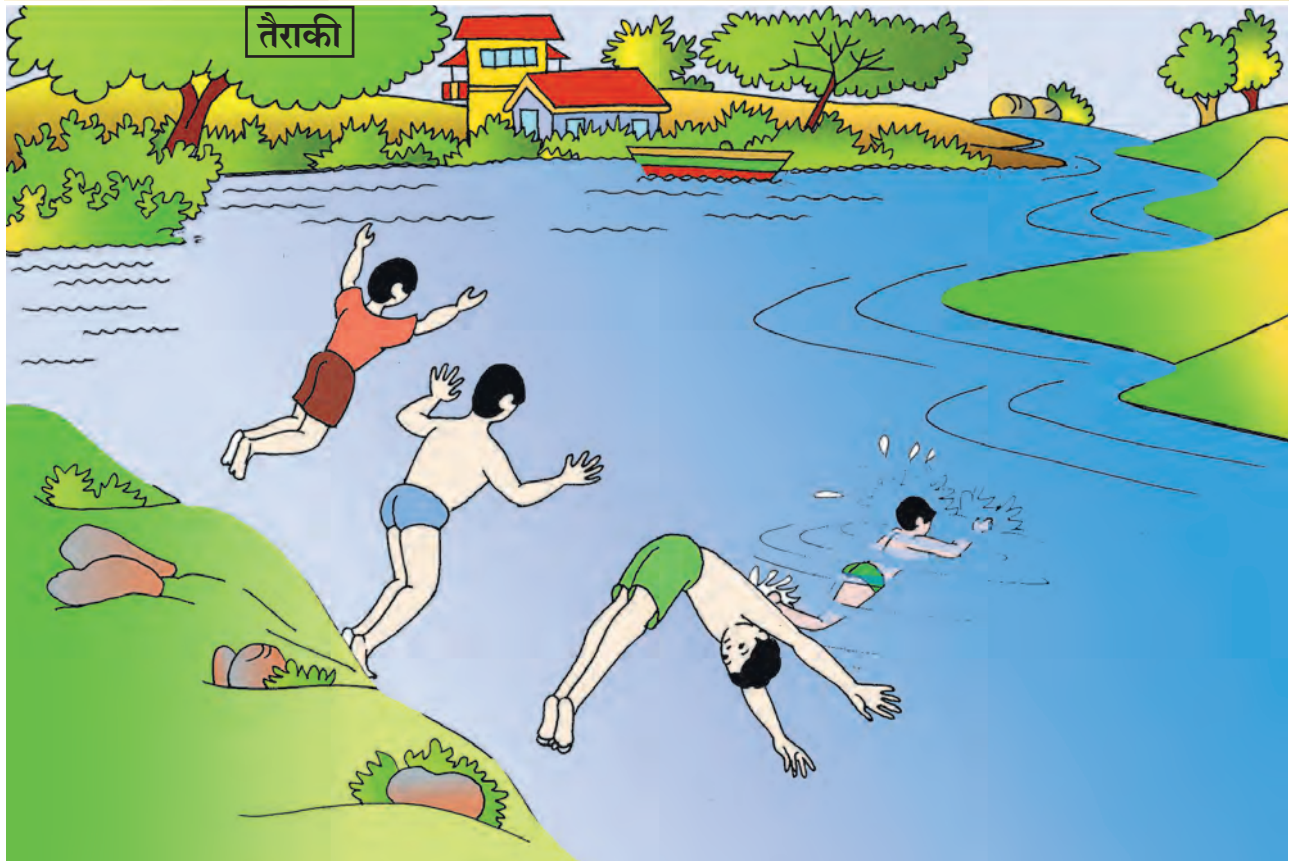
✳ खेत-खलिहान



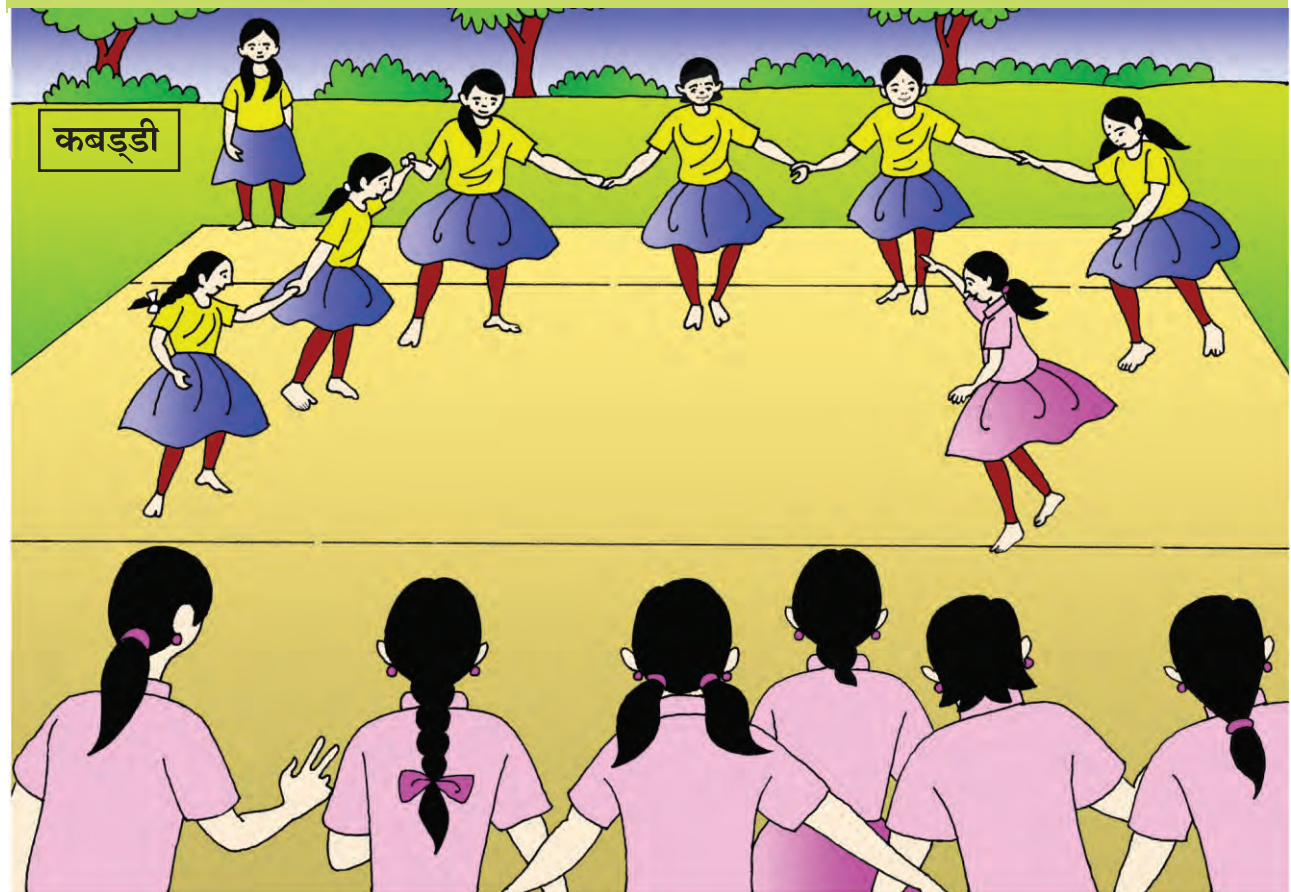
- दिए गए चित्रों का निरीक्षण कराएँ । बीज बोना, खाद-पानी देना, फसल पकने से ओसाई तक की प्रक्रिया पर क्रम से चर्चा कराएँ । खेती और किसान के महत्त्व पर विद्यार्थियों को बोलने हेतु प्रेरित करें । श्रम प्रतिष्ठा पर कोई कविता/कहानी सुनाएँ ।

● चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. खेल



- ❑ चित्रों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कराएँ । विद्यार्थियों से उनकी पसंद के खेलों के नाम पूछें । खेलों, खिलाड़ियों की संख्या आदि के संबंध में प्रश्न पूछकर खेल नियमित खेलने के लिए प्रेरित करें । इन्हीं प्रकार के अन्य खेलों के नाम कहलवाएँ, उनपर चर्चा करें ।



- ❑ खेलों का वर्गीकरण करते हुए मैदानी खेल, अंतर्गृही खेल आदि के बारे में बताएँ। जीवन में खेलों के महत्त्व पर विद्यार्थियों को बोलने हेतु प्रेरित करें। चित्रों में दिए गए वाक्यों पर उनसे चर्चा कराएँ। विद्यार्थियों से उनके प्रिय खिलाड़ियों के नाम पूछें।

● श्रवण – सुनो और गाओ :

२. नानी जी का गाँव



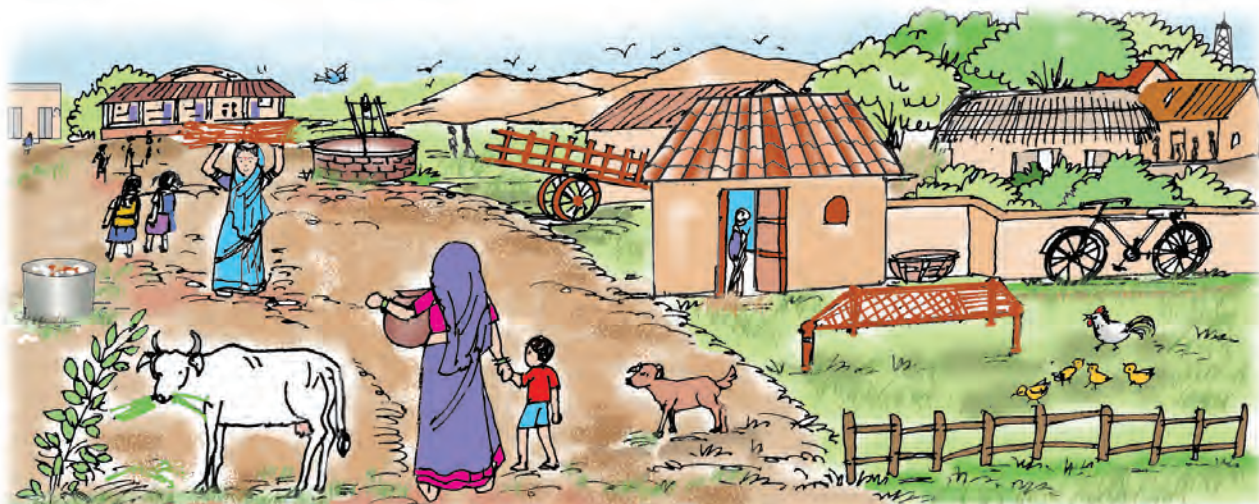
हमने खूब बिताई छुट्टी,
नानी जी के गाँव में ।

अमराई की सघन छाँव में,
बैठ मजे से खेलें हम,
पके आम खाए जी भरकर,
हिला टहनियाँ पेड़ों की हम ।

आया खूब मजा है हमको,
नानी जी के गाँव में ।

सुबह-शाम, पकवान-मिठाई,
नानी जी हर रोज खिलातीं,
अद्भुत कथा-कहानी मोहक,
खूब प्यार से हमें सुनातीं ।
मन हो जाता खुशबू-जैसा,
नानी जी के गाँव में ।

– डॉ. उदयरराज उपाध्याय



□ उचित हाव-भाव, लय-ताल, अभिनय के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से सामूहिक तथा गुट में मुखर वाचन कराएँ । उनसे नानी जी के घर के अनुभव सुनाने के लिए कहें । उन्हें नानी जी से सुनी कोई कविता, कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक इकाई के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।



स्वाध्याय

१. माँ से बालगीत/लोरी सुनो और सुनाओ ।

२. शब्दों की अंत्याक्षरी खेलो :

उदा. तोता.....ताली.....लहर.....रजनी.....नदी.....दीपा.....पौधा.....धान.....

३. कविता में आए क्रमानुसार निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ो :

- (क) बैठ मजे से खेलें हम,
- (ख) हिला टहनियाँ पेड़ों की हम ।
- (ग) अमराई की सघन छाँव में,
- (घ) पके आम खाए जी भरकर,

४. एक शब्द में उत्तर लिखो :

- (च) बच्चे किसकी सघन छाँव में खेले ?
- (छ) बच्चों ने जी भरकर क्या खाया ?
- (ज) बच्चों को पकवान-मिठाई कौन खिलाता था ?
- (झ) नानी जी बच्चों को कैसी कथा-कहानी सुनाती थीं ?



५. चित्रों को देखकर आम से बने खाद्य पदार्थों को पहचानो और उनके नाम बताओ :



६. अपने पड़ोस के बच्चों के साथ तुम कैसा व्यवहार करते हो, बताओ ।

● श्रवण – सुनो और दोहराओ :



३. गौरैया : मेरी सहेली



वह घोंसला बनाती, मैं बिगाड़ती । वह मुझे देखकर फुर्र-से उड़ जाती और मैं गुस्से में आ जाती । पता नहीं, इतना जबरदस्त विरोध होने पर भी वह अपने काम से हट नहीं रही थी । वह काम में जुटी रही और मैं परेशान होती रही । इस संघर्ष में कई दिन बीत गए ।



धीरे-धीरे यह बात सारे घर में फैल गई कि मैं एक छोटी-सी चिड़िया से लड़ रही हूँ । भाईसाहब चिढ़ाते हुए पूछते, “कौन जीता और कौन हारा ? धत् तेरे की ! थक गई, वह भी एक नन्हीं गौरैया से ?” भाईसाहब जितना मुझे चिढ़ाते, उतना ही मेरा पारा चढ़ता ।

एक दिन भाईसाहब आए और हँसकर बोले, “क्यों भाई, लड़ाई का क्या हाल रहा ? ऐसा लगता है, जैसे समझौता हो गया है ।” मैंने कहा, “भाईसाहब, अब जाने भी दीजिए । मैं तो बेचारी गौरैया पर नाहक नाराज होती रही । यह तो बड़ी हिम्मतवाली निकली । मुझे तो इससे सबक लेना चाहिए कि मुकाबला करने वाले को कोई हरा नहीं सकता ।”

भाईसाहब आश्चर्य से मुझे देखते रहे और मैं खिलखिलाकर हँस पड़ी । आज भी वह गौरैया मेरे कमरे में है । अब उसके दो बच्चे भी हो चुके हैं । मेरे कमरे में अब भी तिनके बिखरे रहते हैं । उन्हें मैं चुनकर एक कोने में रख देती हूँ । अब गौरैया मुझे बुरी नहीं लगती । उसमें मुझे साहस दिखाई देता है । गौरैया अब मेरी सहेली बन गई है ।

– हसन जमाल छीपा



- उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ कहानी सुनाएँ और अनुवाचन कराएँ । विद्यार्थियों को मिलकर रहने और दूसरों की भावना का आदर करने के लिए प्रेरित करें । इसी प्रकार की कोई अन्य साहस, मित्रता संबंधी कहानी सुनाने के लिए कहें ।



स्वाध्याय

१. किसी प्राणी की कहानी सुनाओ ।

२. उत्तर दो :

- (क) गौरैया क्या बनाती थी ?
- (ख) लड़की का पारा क्यों चढ़ता था ?
- (ग) गौरैया से कौन-सा सबक लेना चाहिए ?
- (घ) गौरैया के कितने बच्चे हैं ?

३. किसी भारतीय खिलाड़ी की जानकारी का अनुवाचन करो ।

४. सही (✓) या गलत (×) चिह्न लगाओ :

- (च) वह घोंसला बनाती, मैं बिगाड़ती । ()
- (छ) भाईसाहब जितना मुझे चिढ़ाते, उतना ही मुझे आनंद आता । ()
- (ज) मैं तो नाहक बेचारी गौरैया पर नाराज होती रही । ()
- (झ) गौरैया अब मेरी दादी बन गई है । ()



५. चित्रों को देखकर पक्षियों को पहचानो और उनके नाम बताओ :



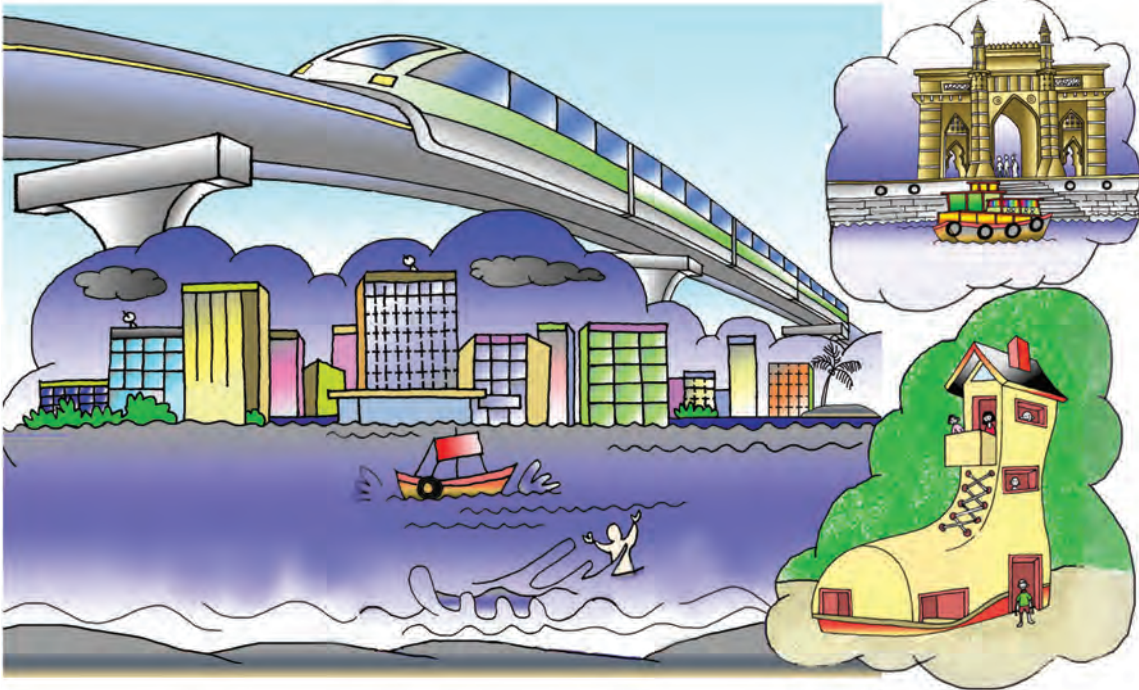
६. तुम्हारा बनाया हुआ चित्र प्रदर्शनी में लगाना है । बस्ते से निकालते समय चित्र फट गया तो तुम क्या करोगे ?

● श्रवण – सुनो और बोलो :

४. मुंबई-छोटा भारत

- क्षितिज** – बहुत दिन हो गए । सलीम खेलने नहीं आया ।
- गुरमीत** – अरे ! तुम्हें पता नहीं क्षितिज, वह तो मुंबई घूमने गया है ।
- आस्था** – अरे वह देखो ! मुंबई से आया मेरा दोस्त, दोस्त को सलाम करो ।
- मेरी** – अच्छा बताओ सलीम, मुंबई में तुमने क्या-क्या देखा ?
- सलीम** – मैंने मुंबई में राष्ट्रीय उद्यान, तारांगण, हाजीअली, माउंट मेरी और कमला नेहरू पार्क देखा । चौपाटी के समुद्री किनारे और गेट वे ऑफ इंडिया पर कबूतरों को दाना चुगाने का आनंद भी लिया ।
- क्षितिज** – सुना है, मुंबई में लोकल ट्रेनें चलती हैं ।
- सलीम** – हाँ ! आजकल लोकल के अलावा मोनो रेल भी चलती है । दिन-रात इनमें लाखों लोग यात्रा करते हैं । अलग-अलग धर्म, जाति, विभिन्न भाषा बोलनेवाले मिल-जुलकर रहते हैं । यही मुंबई की विशेषता है ।
- आस्था** – अरे वाह ! इसका अर्थ है कि मुंबई छोटा भारत है ।
- मेरी** – तुमने सच कहा, मुंबई के बारे में और बातें कल सुनेंगे ।

– कैलाश सेंगर



- दिया गया संवाद दो-तीन बार सुनाएँ और पाठ्यांश पढ़वाएँ । आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों के उच्चारण में सुधार करें । उन्हें अपने जिले की महत्वपूर्ण बातें बताने के लिए कहें । विद्यार्थियों से समानता, जल साक्षरता, प्रदूषण आदि पर संवाद कराएँ ।



स्वाध्याय

१. हाव-भाव के साथ कोई विज्ञापन सुनाओ ।
२. पाठशाला में वृक्षारोपण दिवस कैसे मनाया गया, बताओ ।
३. अपने जिले के मानचित्र का वाचन करो ।
४. उत्तर लिखो :
 - (क) सलीम कहाँ गया था ?
 - (ख) 'मुंबई से आया मेरा दोस्त', किसने कहा ?
 - (ग) सलीम ने मुंबई में क्या-क्या देखा ?
 - (घ) मुंबई को छोटा भारत क्यों कहते हैं ?
५. चित्रों को देखकर वेशभूषा पहचानो और उनके नाम बताओ :



६. तुमने गृहकार्य नहीं किया है । शिक्षक के कारण पूछने पर क्या कहोगे ?

- (च) सच बोलोगे कि तुम गृहकार्य करना भूल गए ।
- (छ) कोई उत्तर न देकर चुप रहोगे ।
- (ज) माफी माँगोगे ।



● वर्णमाला – अनुवाचन करो :

५. मुझे पहचानो



छ ह



ड फ



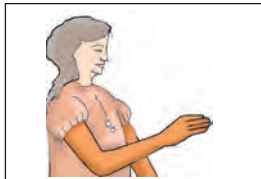
घ ट



अ द र क



आ का श



हा थ



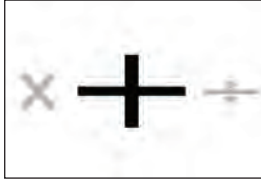
ढ ला न



च म गा द ड



इ ला य ची



ध न



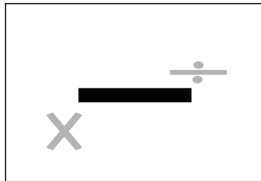
ई द



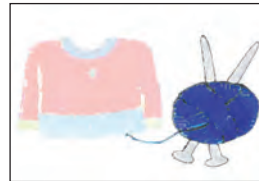
छि प क ली



उ ड न ख टो ला



ऋ ण



ऊ न



जु ग नू



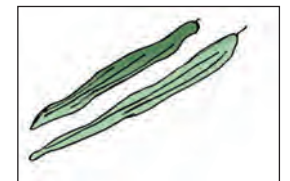
वृ क्ष



झ र ना



न भ च र



स हि ज न



पढ़ो : कम, कप, ढक, चढ़, हम, ईश, गण, नभ, गज, नथ, ऊख, ऋण, जप, इक, कनक, गरम, नरम, ऊपर, रबड़, अगर, मगर, सनक, धमक, चपल, पहर, डगर, बगल, खड़खड़, गटगट, बचपन, गड़बड़, बरगद, आगमन, आचमन, नटखट, पचपन, करधन ।

❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ और पहचानकर नाम बोलने के लिए कहें । विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएँ । संपूर्ण पाठ्यसामग्री का मूल उद्देश्य वर्णमाला के वर्णों का दृढ़ीकरण करवाना है । श्रवण-वाचन का बार-बार अभ्यास और स्वयं अध्ययन अपेक्षित है ।



ए डी



गु ला ब



ऐ रा व त



थै ले



ओ ढ नी



य ज्ञ



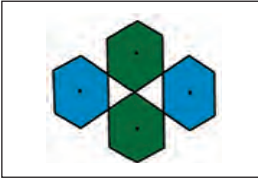
औ र त



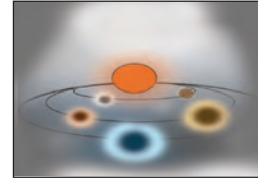
चौ को न



मेज



ष ट को ण



अं त रि क्ष



सं ग ण क



अँ गू ठी



कु आँ



ऑ टो



बॉ ल



प त्र



ग ठ री



ल ह सु न



श्र व ण कु मा र

ड

ञ

ळ

अः



पढ़ो : भन, बस, पढ़, सच, अंक, यज्ञ, त्रय, षट, ठग, पत्र, ऑन, मठ, श्रम, ओर, अंगद, सक्षम, सत्रह, श्रवण, आश्रय, आँगन, नयन, औसत, अंजन, जठर, अनय, अक्षय, अनपढ़, एकटक, भरसक, डगमग, लथपथ, उलझन, षटपद, पदपथ, सरपट, बढ़कर, झटपट, कलतक, लगभग, अचरज, तनमन, अनमन, आजकल, पलभर, मलयज, अतः, नमः, नञ् ।

❑ पृष्ठ १० और ११ के शब्द पढ़ने के लिए दिए गए हैं । विद्यार्थियों से सामूहिक वाचन, व्यक्तिगत मुखर वाचन करवाएँ । इन शब्दों के अर्थ बताना अपेक्षित नहीं है । पूरी वर्णमाला क्रम से कहलवाएँ । इन शब्दों का अनुलेखन एवं श्रुतलेखन करवाएँ ।

● भाषा प्रयोग – पढ़ो और अनुलेखन करो :

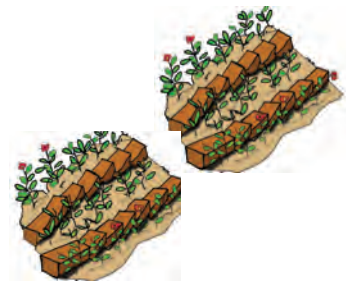
६. बोध



मैंने पूरी पुस्तक पढ़ डाली ।



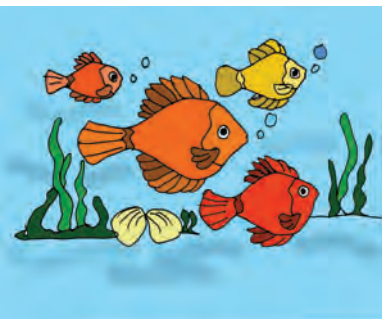
अर्चना ने पुस्तकें भेंट की ।



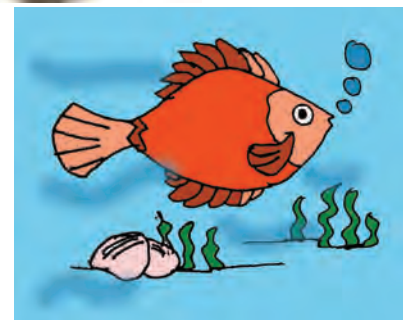
पुष्पेंद्र ने पौधा लगाया ।



क्यारी में अनेक पौधे लगे हैं ।



मछली जल की रानी है ।



मछलियाँ जल में तैरती हैं ।



फूल सभी को अच्छा लगता है ।



गुलदस्ते में कई फूल हैं ।



मेरे पास एक सुंदर माला है ।



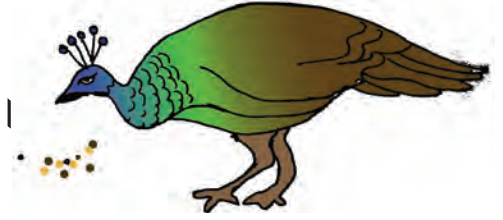
यहाँ मालाएँ टँगी हुई हैं ।

❑ विद्यार्थियों से वाक्यों का वाचन कराएँ । स्त्री-पुरुष और एक-अनेक के बोधवाले शब्दों पर चर्चा करें । इसी प्रकार के अन्य वाक्य कहलवाएँ । विद्यार्थियों को दैनिक व्यवहार में इनके उचित प्रयोग पर बल देने के लिए प्रेरित करें । ऐसे शब्दों की सूची बनवाएँ ।



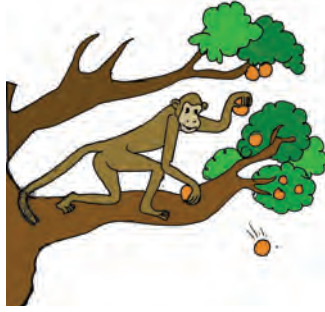
वन में मोर नाच रहा है ।

मोरनी दाना चुगती है ।



छत पर बिलाव बैठा है ।

बिल्लियाँ दूध पी रही हैं ।



बंदर शरारती होता है ।

बंदरिया छलाँग लगा रही है ।



गाय दूध देती है ।

बैल खेत जोतते हैं ।



बाघिन शिकार करती है ।

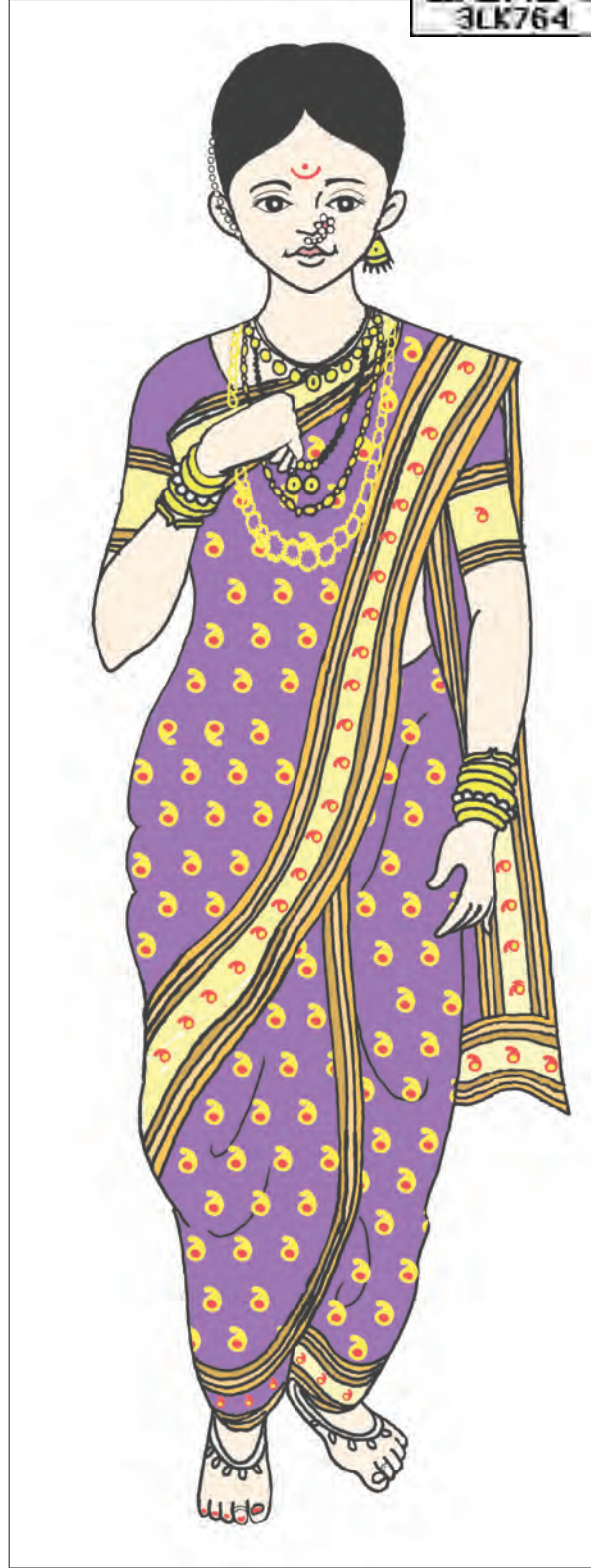
बाघ सोया हुआ है ।



□ एक-अनेक और स्त्री-पुरुष के बोध कराने वाले शब्दों के अन्य उदाहरण देकर वचन/लिंग का दृढीकरण करवाएँ । विद्यार्थियों से पाठ्यपुस्तक में आए इसी प्रकार के शब्दों को ढूँढ़ने और लिखने के लिए कहें । इन शब्दों के प्रयोग पर ध्यान आकर्षित करें ।

● आकलन – अंतर बताओ :

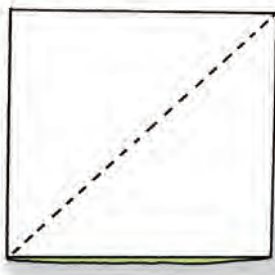
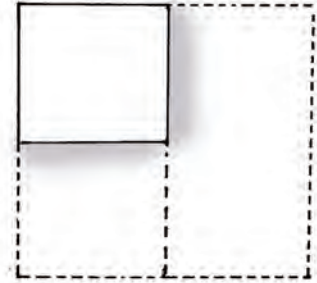
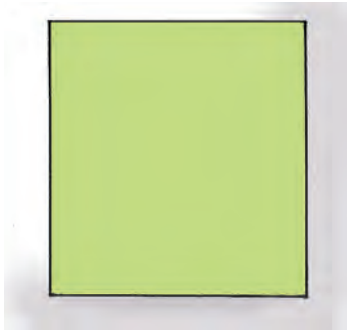
७. महाराष्ट्र की बेटी



□ ऊपर बने चित्रों का ध्यान से निरीक्षण करने के लिए कहें। चित्रों में १० अंतर दिए गए हैं, विद्यार्थियों से उन्हें ढूँढ़ने के लिए कहें।

● कार्यानुभव – सुनो, समझो और बनाओ :

द. नाव



- (१) एक चौकोन रंगीन कागज लो । (२) कागज को आधा मोड़ो । (३) आधे कागज को फिर मोड़ो । अब कागज एक चौथाई बनेगा । (४) एक चौथाई कागज के एक सिरे को एक तरफ मोड़ो । (५) बाकी तीन सिरों को दूसरी तरफ मोड़ो । (६) तिकोने कागज को खोलो । उसे मध्यभाग से मोड़कर दोनों ओर के अन्य सिरों को एक-दूसरे से मिलाओ । (७) अब उसे उलटा करो । ऊपर के सिरों को खोलो और नाव का आकार दो । (८) लो तैयार हो गई तुम्हारी नाव !



- ❑ चित्रों का निरीक्षण करवाएँ । नाव बनाने की प्रक्रिया पढ़ें/पढ़वाएँ और उसपर चर्चा करवाएँ । उचित मार्गदर्शन करते हुए विद्यार्थियों से नाव बनवाएँ । बचपन में नाव से खेलने के उनके अनुभव सुनाने के लिए कहें । इसी प्रकार कागज से नाव, पतंग आदि बनवाएँ ।

● आत्मकथा – सुनो, पढ़ो और लिखो :

९. मैं तितली हूँ



बच्चो ! क्या मुझे पहचानते हो ? तुम समझ ही गए होगे कि मैं तितली हूँ । यहाँ-वहाँ उड़ती, अनेक आकार-प्रकार की रंग-बिरंगी तितलियाँ तुम सबने देखी होंगी ।

मेरे शरीर के सिर, वक्ष और उदर तीन भाग हैं । मेरे तीन जोड़ी पैर होते हैं । मेरे सिर पर आँखें होती हैं । फूलों का रस मेरा भोजन है । इसे पाने के लिए मैं एक फूल से दूसरे फूल पर मँडराती रहती हूँ । मैं अपनी सूँड़ से फूलों का रस पीती हूँ ।

मैं जानती हूँ कि तुम बच्चों को मेरा रंग-रूप, विशेषकर पंख बहुत सुंदर लगते हैं । तुम्हारी जानकारी के लिए बताती हूँ कि मेरे दो जोड़ी पंख होते हैं । इनपर कई रंगों के आकर्षक चकत्ते होते हैं । एक बात का मुझे बहुत दुख है कि तुम बच्चे प्रायः मुझे पकड़कर अपनी पुस्तक या कॉपी में बंद करके रख देते हो । इससे मेरी मृत्यु हो जाती है ।

बच्चो ! मैं लंबे समय तक तुम लोगों के साथ रहना चाहती हूँ । इसलिए शपथ लो कि आज से तुम लोग मुझे पकड़ोगे नहीं । अच्छा चलती हूँ, बहुत भूख लग रही है । मुझे उस गेंदे के फूल का रस भी पीना है । नमस्ते !



□ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । आत्मकथात्मक शैली संबंधित चर्चा करें । विद्यार्थियों को अपने बारे में आत्मकथन शैली में बोलने के लिए प्रेरित करें । इसको कहानी के रूप में लिखवाएँ ।



स्वाध्याय

१. मोटू-पतलू का किस्सा सुनकर अपने मित्रों /सहेलियों को सुनाओ ।
२. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी बताओ :
पैर, आँख, पंख, फूल, नाव, गाँव, किसान, पानी, शरारती, पेड़, हाथ, भोजन, सहायता ।
३. वाक्यों का मुखर वाचन करो, समझो और विरामचिह्नों का उचित उपयोग करो :
(क) मेरे शरीर के सिर वक्ष और उदर तीन भाग हैं
(ख) क्या मुझे पहचानते हो
(ग) नमस्ते
(घ) अच्छा चलती हूँ बहुत भूख लगी है
४. उत्तर लिखो :
(च) तितली के शरीर के कितने भाग होते हैं ?
(छ) तितली का भोजन क्या है ?
(ज) भोजन पाने के लिए तितली कहाँ मँड़राती है ?
(झ) तितली ने कौन-सी शपथ लेने के लिए कहा ?
५. गेंदे के फूल से क्या-क्या बनाया गया है, चित्र देखकर बताओ :



६. उड़ती पतंग के माँड़े से घायल होकर एक कबूतर रास्ते में गिरा है, ऐसे में तुम क्या करोगे ?

● व्यावहारिक सृजन – सुनो, समझो और करो :



१०. सप्ताह का अंतिम दिन



सप्ताह का अंतिम दिन था। कक्षा में आते ही बहन जी ने विद्यार्थियों के चेहरे देखकर समझ लिया कि आज उनकी पढ़ने की इच्छा नहीं है। उन्होंने कहा, “बच्चो ! आज हम पढ़ाई नहीं करेंगे।” बच्चे खुशी से उछल पड़े। बहन जी सबको शांत कराती हुई बोलीं, “सब एक पंक्ति में खड़े हो जाओ। अब हम सब मैदान में पेड़ के नीचे चलेंगे।” सभी बच्चे पंक्तिबद्ध होकर पेड़ के नीचे आ गए। बहन जी ने सबको अर्धगोलाकार में बैठने की सूचना दी। सभी बच्चे फटाफट बैठ गए।



बहन जी ने पहले से ही परचियाँ बना ली थीं। परचियों में किसान, रसोइया, दूधवाला, सब्जीवाला, डॉक्टर आदि के नाम तथा भोजन बनाने की विविध कृतियाँ लिखी हुई थीं। उन्होंने कहा, “बारी-बारी से सभी आकर एक-एक परची उठाएँगे। परची लेने के बाद सोचने के लिए पाँच मिनट का समय मिलेगा। मैं कोई एक उपस्थिति क्रमांक बोलूँगी। उस क्रमांक का विद्यार्थी परची के विषय के अनुसार सामने आकर अभिनय करेगा। शेष सभी विद्यार्थी अभिनय के बाद उस व्यवसाय का नाम बताएँगे।” फिर क्या था, अभिनय का खूब रंग जमा। विद्यार्थियों ने एक से बढ़कर एक अभिनय किए। बहन जी ने सभी के अभिनय की खूब प्रशंसा की और आवश्यक मार्गदर्शन भी किया। विद्यार्थी बहुत प्रसन्न थे। घर जाकर उन्होंने अपना-अपना अभिनय परिवार के सदस्यों के सामने प्रस्तुत किया। घरवालों ने भी खूब शाबाशी दी। बच्चों ने सोचा कि सप्ताह का अंतिम दिन अच्छा बीता।

- उचित उच्चारण आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करते हुए सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी समझते हुए सुन रहे हैं। पाठ में आए विषयों के अनुसार अभिनय कराएँ। विद्यार्थियों से उनकी पसंद के किसी कलाकार के अभिनय की नकल करने के लिए कहें।



स्वाध्याय

१. सप्ताह का अपना नियोजन सुनाओ ।
२. तुम्हारे परिसर में कौन-कौन-सी दुकानें हैं, बताओ ।
३. सुविचार पढ़ो और समझो :

- (क) झूठ बोलना बुरी बात है ।
- (ख) आज का काम कल पर मत छोड़ो ।
- (ग) सोचो, समझो फिर करो ।
- (घ) लालच बुरी बला है ।



४. चित्रों और शब्दों की जोड़ियाँ मिलाओ :



दूधवाला



सब्जीवाला



डॉक्टर



रसोइया

५. निम्नलिखित चित्रों को पहचानो और उनकी बोलियों/कृतियों का अभिनय करो :



६. तुम किन-किन कामों में पिता जी की सहायता करते हो, बताओ ।

* पुनरावर्तन *

* बिंदुओं में क्रमशः पूरी वर्णमाला लिखकर जोड़ो और क्रम से बोलो :





* पुनरावर्तन *

१. १ से ५० तक की संख्याएँ सुनो और सुनाओ ।
२. अपना और अपने परिवार का विस्तार से परिचय दो ।
३. पंचतंत्र की कहानियाँ पढ़ो ।
४. दिए गए वर्णों का उपयोग करते हुए बिना मात्रावाले शब्द सुधारकर लिखो :
(क, ढ, ग, ब, घ, ड, श, ऋ, भ, अं, आँ, औँ, ज)
शरभत, पनगट, गघन, सहद, लगबग, आंगन, ऐनख, अँत, गढ, आँन, ढफ, अझगर, रितु ।
५. अक्षर समूह में से संतों के उचित नाम बताओ और लिखो :

ई	रा	मी	बा	
र	क	दा	बी	स
दा	तु	सी	स	ल
म	तु	रा	का	
व	ना	दे	म	

उपक्रम

माता-पिता से
अपने बारे में
सुनो ।

पिछले वर्ष किए
अपने विशेष कार्य
बताओ ।

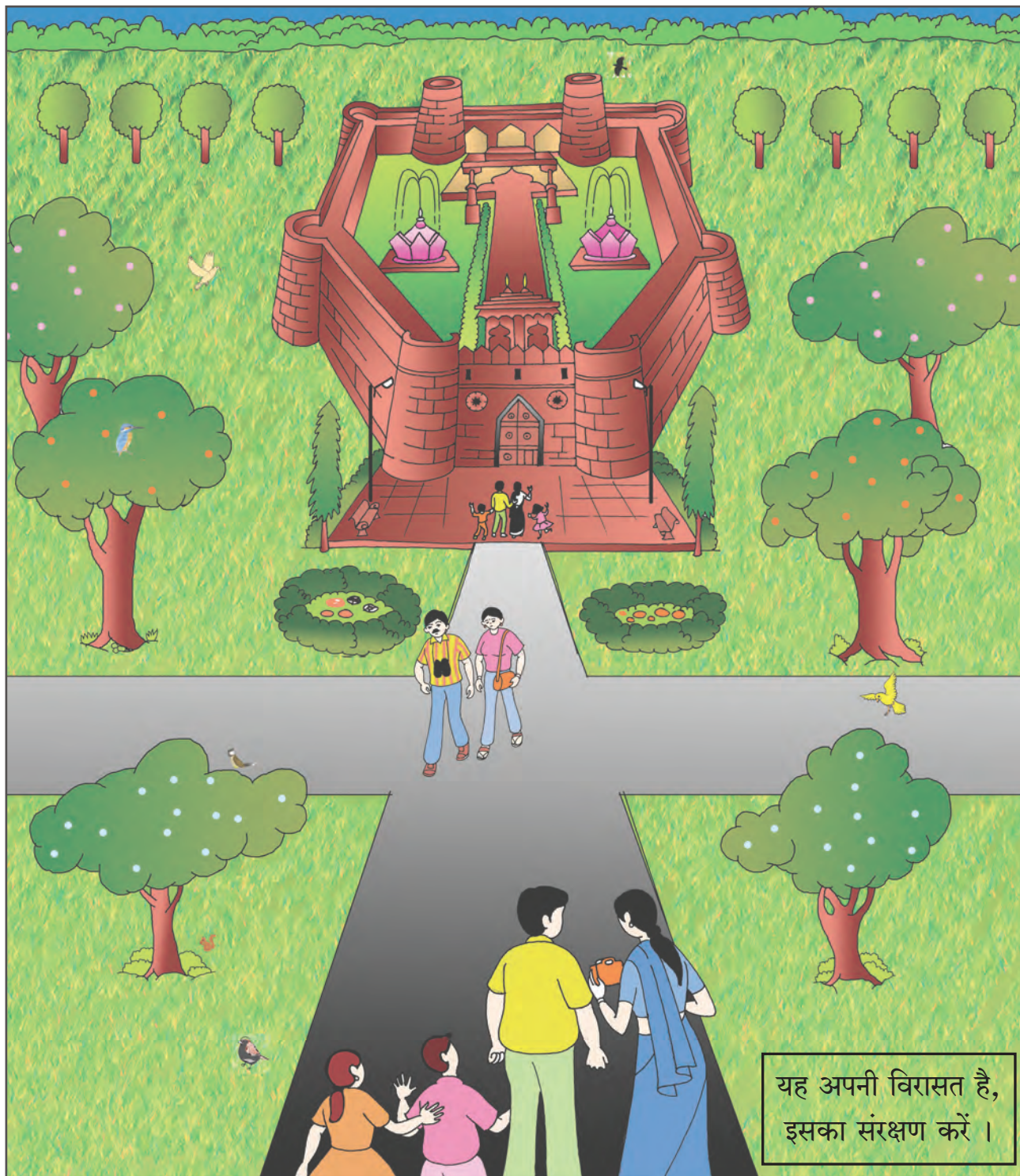
समाचारपत्र में
मुख्य समाचारों
के शीर्षक पढ़ो ।

मिठाइयों की
सूची बनाओ ।

● चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. किला और गढ़

युद्ध के समय शत्रुसेना से बचाव के लिए किले बनाए जाते थे । किले की दीवारें मजबूत होती हैं । उनकी संरचना परकोटेदार होती है । भारत में अनेक किले हैं । ये हमारी ऐतिहासिक धरोहर हैं ।



□ दिए गए चित्रों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने और वाक्यों को पढ़ने के लिए विद्यार्थियों को सूचना दें । चित्रवाचन करवाकर चित्रवर्णन कराएँ । किले, गढ़ों की दीवारें इतनी मजबूत क्यों बनाई गईं; इस पर चर्चा कराएँ । किले के विविध भागों को बताएँ और समझाएँ ।